|  |
| --- |
| 25. Juli  |
| **Fest des heiligen Apostels Jakobus** |
| Lesung: 2 Kor 4,7-15; Evangelium: Mt 20,20-28 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 546, 1-4 | Christus, du Licht vom wahren Licht |
|  | GL 461, 1+2 | Mir nach, spricht Christus |
|  | GL 400, 1+2 | Ich lobe meinen Gott |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 7 | Herr Jesus |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 169, 1+2 | Gloria. Ehre sei Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 126, 1-6 |  |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 443 | Im Jubel ernten |
|  | oder |  |
|  | GL 457, 1-3 | Suchen und fragen |
|  | GL 349 | Geist der Zuversicht |
|  | GL 481, 1+5! | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 4 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Ich habe euch erwählt und dazu bestimmt,* |
|  | *dass ihr reiche Frucht bringt und dass eure Frucht bleibt.* |
|  |  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 281, 3+4 | Ich bin euer Weg geworden |
|  | GL 460, 1+3+5 | Wer leben will |
|  | GL 275 | Selig, wem Christus |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 199 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 202 | O du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 487, 1-5 | Nun singe Lob |
|  | GL 380, 1+4 | Großer Gott |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 542, 1+4 | Ihr Freunde Gottes |